

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मानवता और पाप, सत्र 14, मूल पाप, रोमियों 5:12-19, में रोमियों 1:18-3:21 का संदर्भ

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दिए गए उनके उपदेश हैं। यह सत्र 14 है, मूल पाप, रोमियों 5:12-19, रोमियों 1:18-3:21 के संदर्भ में।

हम पाप के सिद्धांत, हैमार्टियोलॉजी का अपना अध्ययन जारी रखते हैं।

पाप के बाइबिल विवरण पर काफी समय बिताने के बाद, हम मूल पाप में जाने के लिए तैयार हैं, लेकिन ऐसा करने के लिए, हमें आदम और हव्वा के पाप में पतन के बारे में बहुत ही संक्षिप्त विवरण की आवश्यकता है। जॉन महोनी ने पहले ही इस पर ध्यान केंद्रित किया है, इसलिए एक संक्षिप्त सारांश पर्याप्त होना चाहिए। परमेश्वर ने आदम को बनाया और उसे एक परिपूर्ण वातावरण में रखा।

उसने आदम से कहा कि वह बगीचे में किसी भी पेड़ से फल खा सकता है, सिवाय अच्छे और बुरे के ज्ञान के पेड़ के। प्रभु ने मनुष्य को चेतावनी दी, क्योंकि जब तुम इसका फल खाओगे, तो तुम अवश्य मर जाओगे, उत्पत्ति 2:17। फिर परमेश्वर ने आदम के लिए एक सहायक के रूप में हव्वा को बनाया।

उत्पत्ति 3 में, शैतान के एक उपकरण, चालाक साँप ने प्रकाशितवाक्य 12:9 की तुलना की, हव्वा से बात की, और परमेश्वर द्वारा आदम को दिए गए निषेध पर सवाल उठाया। क्या परमेश्वर ने वास्तव में कहा था कि तुम्हें बगीचे के किसी भी पेड़ से नहीं खाना चाहिए? पद 1, हव्वा ने परमेश्वर द्वारा दिए गए विशेषाधिकारों और निषेध को फिर से दोहराया। शैतान तब परमेश्वर की पिछली चेतावनी को यह कहकर नकारता है, उद्धरण, तुम निश्चित रूप से नहीं मरोगे, क्योंकि परमेश्वर जानता है कि जब तुम इसे खाओगे, तो तुम्हारी आँखें खुल जाएँगी, और तुम परमेश्वर के समान हो जाओगे, अच्छे और बुरे को जानोगे, पद 4 और 5। फिर भी, आदम ने निषिद्ध फल खाकर पाप किया।

उनका पाप उनके सृष्टिकर्ता के प्रति अवज्ञा और विश्वासघात था। उन्हें जो मृत्यु मिली वह तत्काल और अंतिम दोनों थी। वे तुरन्त मर गए क्योंकि वे परमेश्वर के साथ संगति से कट गए थे।

वे प्रभु से छिप गए और जब परमेश्वर ने उन्हें उनके पाप के बारे में बताया तो उन्होंने दोष दूसरों पर मढ़ दिया। अनुग्रह में, परमेश्वर ने उन्हें बगीचे से बाहर निकाल दिया, ताकि वे जीवन के वृक्ष से न खाएँ और हमेशा के लिए पापी स्थिति में न जीएँ। यह ऐसा होगा जैसे प्रभु हमसे कह रहे हों, ठीक है, तुम मेरे बच्चे हो।

मैंने तुम्हें पाप से मुक्त कर दिया है। यह नया आकाश और नई पृथ्वी है। यह हमेशा ऐसे ही चलता रहेगा, जो कि अच्छी बात नहीं है क्योंकि हमारे पास नश्वर शरीर में अनंत जीवन है।

और कुछ हद तक, हम सभी का जीवन अस्त-व्यस्त है। निश्चित रूप से, व्यापक सांस्कृतिक जीवन अस्त-व्यस्त है, इत्यादि। यह अच्छी बात नहीं होगी।

इसलिए, उन्हें अदन से बाहर निकालना परमेश्वर की दया थी। बाद में, वे आध्यात्मिक रूप से तुरंत मर गए, संभवतः उन्हें माफ़ कर दिया गया क्योंकि परमेश्वर ने उनका सामना किया और छुटकारे का पहला वादा किया। कुछ लोग इसे जानवरों की बलि देने से जोड़ते हैं ताकि उन्हें चमड़े के कोट दिए जा सकें।

बाद में, वे शारीरिक रूप से मर गए। अगर उन्होंने पाप न किया होता तो वे नहीं मरते। आध्यात्मिक और शारीरिक मृत्यु परमेश्वर के प्रति उनकी अवज्ञा का परिणाम है।

इस प्रकार उत्पत्ति हमारे पहले माता-पिता के पाप में गिरने का वर्णन करती है। यह पतन के धार्मिक विश्लेषण में नहीं जाता है। डेरेक किडनर, जो एक कॉन्सर्ट पियानोवादक थे, जो पुराने नियम के विद्वान बन गए, और मुझे उनके लेखन बहुत पसंद हैं।

ओह, वे बाइबिल से हैं। वे बहुत अच्छी तरह से लिखे गए हैं। वह किसी मामले के मर्म तक बहुत अच्छी तरह से पहुँचते हैं।

हाल ही में वे प्रभु के पास चले गए। उनकी रचनाएँ इतनी लोकप्रिय थीं कि जब इंटरवर्सिटी ने उनमें से कुछ को नए विद्वानों से बदलना शुरू किया, जो कि समझ में आता है, तो इतना विरोध हुआ कि प्रकाशक ने डेरेक किडनर लाइब्रेरी शुरू कर दी, जिससे उनकी सभी रचनाएँ फिर से उपलब्ध हो गईं। डेरेक किडनर ने कहा, उद्धरण में, कि मूल पाप का सिद्धांत उत्पत्ति तीन अध्याय में निहित है, कि पाप एक आदमी के माध्यम से दुनिया में आया और पाप के माध्यम से मृत्यु। रोमियों 5:12 केवल नए नियम में ही स्पष्ट रूप से उभर कर आता है।

पुराने नियम में कहानी का बहुत कम उपयोग किया गया है, हालाँकि यह मनुष्य की दासता को दर्शाता है। इसमें सिद्धांत की सामग्री है, लेकिन इसे सूत्रबद्ध नहीं किया गया है। टिंडेल ओल्ड टेस्टामेंट कमेंट्री।

प्रेरित पौलुस ही मूल पाप के सिद्धांत को तैयार करने वाला व्यक्ति होगा। नया नियम रोमियों 5 में मूल पाप के सिद्धांत को प्रस्तुत करता है। रोमियों 5, 12 से 19 में मूल पाप। अवलोकन, रोमियों 1:18 से 5:21 का विश्लेषण।

दूसरा, एक व्याख्या, रोमियों 5:12 से 19 के ग्रीक पाठ पर आधारित एक विस्तृत अध्ययन, या मुझे लगता है कि यह 21 तक जाता है। फिर, मूल पाप के विचार, जिसमें पेलागियनवाद, आर्मिनियनवाद और विभिन्न कैल्विनवादी विचार शामिल हैं। फिर, मैं मूल पाप के विचारों का मूल्यांकन करूँगा, जो वही विचार हैं जो मैंने अभी पढ़े हैं।

उस मूल्यांकन में, मैं अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करता हूँ, उसके बाद मूल पाप के सिद्धांत के व्यवस्थित और पादरीय निहितार्थ प्रस्तुत करता हूँ। रोमियों 5:12 से 19 में मूल पाप। रोमियों 1:18 से 5:21 तक का विश्लेषण।

रोमियों का यह खंड औचित्य के सिद्धांत पर आधारित एक इकाई है। आप कहते हैं, एक मिनट रुकिए, आपने पहले भी कई बार कहा है कि रोमियों 5:12 से 19 शास्त्रीय पाठ है, मूल पाप के लिए टेक्स्टस क्लासिकस। यह सच है।

लेकिन अब आप मुझे बता रहे हैं कि यह रोमियों के एक भाग में है जिसका मुख्य विषय औचित्य है। यह भी सच है। औचित्य के विषय के संबंध में, रोमियों 5:21 मूल पाप पर संपूर्ण बाइबल में शास्त्रीय पाठ है, हालाँकि यह मुख्य रूप से औचित्य का एक अंश है जो औचित्य और मूल पाप से संबंधित है।

वास्तव में, यह उनसे बहुत घनिष्ठ रूप से संबंधित है। रोमियों 1:18 से 3:20 तक, वह लंबा भाग, औचित्य की आवश्यकता को दर्शाता है। 3:21 से 5:21, बताता है कि कैसे परमेश्वर ने मसीह के कार्य में इस आवश्यकता को पूरा किया।

बीच में विश्वास पर एक अध्याय, रोमियों 4, के साथ। पौलुस ने रोमियों 1:16 और 17 में अपने पत्र का विषय प्रस्तुत किया है। क्योंकि मैं सुसमाचार से नहीं लजाता, इसलिये कि वह हर एक विश्वास करनेवाले के लिये, पहिले तो यहूदी, फिर यूनानी के लिये उद्धार के निमित्त परमेश्वर की सामर्थ है।

क्योंकि सुसमाचार में, क्योंकि इसमें परमेश्वर की धार्मिकता विश्वास से विश्वास तक प्रकट होती है, क्योंकि लिखा है, धर्म विश्वास से जीवित रहेगा। पौलुस सुसमाचार की व्याख्या करने जा रहा है, यह अच्छी खबर कि परमेश्वर उन पापियों को बचाता है जो मसीह में विश्वास करते हैं। अच्छी खबर में, परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट होती है।

मैं लूथर के संघर्ष के बारे में सोचे बिना नहीं रह सकता। उसने सही ढंग से कहा कि धार्मिकता, पुराने नियम में परमेश्वर की धार्मिकता, कभी-कभी उसकी निंदा करने वाली धार्मिकता, उसकी निंदा करने वाली धार्मिकता का अर्थ है। और यह लूथर के दिमाग में भरा हुआ था।

जब उसने ये शब्द पढ़े तो उसका मन उसी धारणा से भर गया। सुसमाचार में परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट होती है। और लूथर कहता है, ओह, मैं उस परमेश्वर को बर्दाश्त नहीं कर सकता।

वह बेचारे पापियों का मज़ाक उड़ाता है। वह पापियों की निंदा करने के लिए इसे खुशखबरी कहता है। और उसने भगवान पर अपनी मुट्ठी हिलाई।

वह एक ईमानदार आदमी नहीं है। उसमें कोई कपट नहीं था। अच्छी खबर में, परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट होती है।

जैसे-जैसे लूथर को धीरे-धीरे और खुशी से एहसास हुआ, पॉल परमेश्वर की बचाने वाली धार्मिकता की बात कर रहा था, न कि उसकी निंदनीय धार्मिकता की। प्रेरित हबक्कूक 2:4 की व्याख्या इस तरह करता है कि न्यायोचित व्यक्ति यीशु पर उद्धारकर्ता के रूप में भरोसा करके अनन्त जीवन प्राप्त करेगा। जब लूथर ने इसे समझा, तो उसने कहा, स्वर्ग के द्वार खुल गए, और मैं सीधे अंदर चला गया क्योंकि उसने विश्वास किया।

लेकिन पहले, मैंने देखा कि उसने कैसे संघर्ष किया। अरे, उसने कैसे संघर्ष किया। पॉल, अपनी थीम की घोषणा करने के बाद, एक अद्भुत काम करता है।

मैं सुसमाचार से शर्मिदा नहीं हूँ। यह हर उस व्यक्ति के लिए उद्धार के लिए परमेश्वर की शक्ति है जो विश्वास करता है, चाहे वह यहूदी हो या गैर-यहूदी। क्योंकि सुसमाचार में परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट होती है।

जैसा कि लिखा है, धर्मी लोग विश्वास से जीवित रहेंगे। लेकिन पौलुस आगे यही नहीं कहता। वह कहता है कि परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रकट होता है।

अपने विषय, परमेश्वर की बचाने वाली धार्मिकता की घोषणा करने के बाद, पौलुस पद 18 में परमेश्वर की बचाने वाली धार्मिकता के प्रकाशन की बात नहीं करता, बल्कि उसके क्रोध की बात करता है। " क्योंकि परमेश्वर का क्रोध तो उन लोगों की सब अभक्ति और अधर्म पर स्वर्ग से प्रगट होता है, जो सत्य को अधर्म से दबाए रखते हैं।"

पौलुस ने वाक्य में से धार्मिकता शब्द को निकाल दिया है, अर्थात् परमेश्वर की धार्मिकता। उसने धार्मिकता को हटा दिया है, और उसके स्थान पर क्रोध को रख दिया है। उसने धार्मिकता के स्थान पर क्रोध को रख दिया है।

अब, जैसा कि वह कहता है, परमेश्वर का क्रोध प्रकट होता है। धार्मिकता और क्रोध एक दूसरे के साथ शाब्दिक अर्थविज्ञान और प्रतिमानात्मक संबंधों की भाषा का उपयोग करते हैं। अर्थात्, उन्हें एक साथ समझा जाना चाहिए क्योंकि वे एक दूसरे को प्रभावित करते हैं।

इस मामले में, वे एक दूसरे से दुश्मनी करते हैं। प्रेरित जिस धार्मिकता की बात करेंगे, उसे पाप और पापियों के खिलाफ परमेश्वर की पवित्र घृणा की पृष्ठभूमि के बिना नहीं समझा जा सकता। परमेश्वर का क्रोध 1:18 से 3:20 तक का विषय होगा।

और यही मनुष्य की मूलभूत समस्या है। परमेश्वर को स्वयं अपने क्रोध से निपटना होगा ताकि वह अपनी उद्धारकारी धार्मिकता को प्रकट करे और उस पर विश्वास करे। इस प्रकार मैं 1:18 को 1:18 से 3:20 तक के लिए निर्णायक के रूप में समझता हूँ।

रोमियों के पूरे भाग को परमेश्वर के क्रोध के प्रकटीकरण के रूप में समझा जाना चाहिए। अगर आप चाहें तो इसे एक विषय शीर्षक कह सकते हैं। यह दो कारणों से सच है।

पहला, इस भाग की विषय-वस्तु पापियों के विभिन्न समूहों के प्रति ईश्वरीय नाराजगी को दर्शाती है जब तक कि पूरी दुनिया ईश्वर के सामने दोषी नहीं ठहरा दी जाती। दूसरा, 3:21 में, पौलुस 1:16 और 1:17 में पहले से घोषित अपने विषय पर लौटता है। लेकिन अब परमेश्वर की धार्मिकता व्यवस्था से अलग प्रकट हुई है, हालाँकि व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता इसकी गवाही देते हैं।

पौलुस ने अपने इस कथन में कि परमेश्वर का क्रोध प्रकट हुआ है, क्रोध शब्द को हटा दिया है और 3:21 में उस स्थान पर धार्मिकता शब्द को वापस रख दिया है। यहाँ भी, 1:17 की तरह, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है। मैं इसे फिर से कहता हूँ।

1:16 और 1:17 में, और जितने भी टिप्पणीकार मैंने देखे हैं, वे सभी इस बात से सहमत हैं, पौलुस ने रोमियों के उद्देश्य कथन को प्रस्तुत किया है। यह सुसमाचार, उद्धार के शुभ समाचार, मसीह में परमेश्वर की उद्धारकारी धार्मिकता के प्रकटीकरण के बारे में है। अगली आयत में, वह धार्मिकता शब्द को निकालता है, क्रोध शब्द को डालता है, और 320 तक उसे वहीं छोड़ देता है।

वह क्या कर रहा है? वह दिखा रहा है कि परमेश्वर का उद्धार, पवित्र और प्रेममय परमेश्वर द्वारा पापियों का औचित्य, केवल पाप और क्रोध और न्याय के सिद्धांत के प्रकाश में ही ठीक से समझा जा सकता है। वे अध्याय, पाप और उद्धार की आवश्यकता से निपटने वाले वे खंड, गहरे बैंगनी या काले जौहरी के कपड़े की तरह हैं जिसमें हीरे, माणिक और फ़िरोज़ा को उनकी सुंदरता और चमक को उजागर करने के लिए रखा जाता है। इसी तरह, परमेश्वर के औचित्य को हमारे औचित्य की आवश्यकता के अलावा भी नहीं समझा जा सकता है, जो कि 118 से 320 का विषय है।

1:18 से 3:20 में पौलुस ने मानवीय पाप के विरुद्ध परमेश्वर के पवित्र क्रोध की शक्तिशाली प्रस्तुति की है। प्रेरित दिखाता है कि कैसे लोगों के विभिन्न समूह परमेश्वर के सामने दोषी ठहराए जाते हैं। सबसे पहले, सूर्य के नीचे हर कोई परमेश्वर के क्रोध के अधीन है क्योंकि सभी ने सृष्टि में परमेश्वर के प्रकाशन, उसके प्राकृतिक नियम, यदि आप चाहें, को दूर धकेल दिया है, 1:18 से 1:32 तक।

दूसरा, वे सभी जो दूसरों पर नैतिक निर्णय देते हैं, वे मानव हृदय पर लिखे परमेश्वर के नियम का उल्लंघन करते हैं और स्वयं को दोषी मानते हैं, 2:1 से 16। जैसा कि 1:32 और 2:1 की तुलना से पता चलता है, दूसरा समूह पहले से अलग है। 1:32 रोमियों 1:32 को दर्शाता है।

हालाँकि वे परमेश्वर के धर्मी आदेश को जानते हैं कि जो लोग ऐसी चीज़ों का अभ्यास करते हैं, वे मृत्यु के योग्य हैं, फिर भी वे न केवल ऐसा करते हैं बल्कि उन लोगों को स्वीकृति भी देते हैं जो ऐसा करते हैं। यहाँ पापी दूसरे पापियों को पाप के जीवन में उकसा रहे हैं, अगर आप चाहें तो साथियों के दबाव में आकर पाप कर रहे हैं। 2:1 अलग है।

इसलिए, हे मनुष्य, तुममें से प्रत्येक व्यक्ति जो न्याय करता है, उसके लिए कोई बहाना नहीं है, क्योंकि दूसरे पर निर्णय देते समय, तुम स्वयं को दोषी ठहराते हो, क्योंकि तुम, न्यायाधीश, उन्हीं चीज़ों का अभ्यास करते हो जिनकी तुम निंदा करते हो। पहला समूह जानबूझकर बुराई में लिप्त

रहता है और दूसरों को ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित करता है, 1:32। हाँ, चलो पाप से निपटते हैं।

दूसरा समूह, 2:1, पाप करता है और उन लोगों पर निर्णय सुनाता है जो वही पाप नहीं करते। दूसरा समूह पाखंडी है जबकि पहला समूह पाखंडी नहीं है। अगर आप कहें तो वे ज़्यादा ईमानदार पापी हैं।

मुझे नहीं पता कि कौन सा बदतर है, और वे दोनों ही बुरे हैं। रोमियों 2:17 से 29 तीसरे समूह को दर्शाता है, वास्तव में पॉल का मुख्य ध्यान, यहूदियों पर है। यहूदियों को न केवल प्राकृतिक कानून और हृदय पर लिखे कानून का लाभ है, बल्कि वे पत्थर की पट्टियों पर लिखे परमेश्वर के कानून को पाने में भी अद्वितीय हैं।

उनके पास परमेश्वर का लिखित वचन है, फिर भी कानून अन्य कानूनों, प्राकृतिक कानून, हृदय पर कानून की तुलना में किसी को अधिक नहीं बचा सकता है। कानून, कैपिटल एल, उन कानूनों की तुलना में किसी को अधिक नहीं बचा सकता है। पुराने नियम में यहूदियों की निंदा की गई है; इस प्रकार, नए नियम के युग तक, इस्राएल सृष्टि में रहस्योद्घाटन द्वारा, मानव हृदय पर रहस्योद्घाटन द्वारा, और विशेष रूप से परमेश्वर की उंगली से पत्थर की पट्टियों पर लिखे गए परमेश्वर के लिखित वचन द्वारा तीन बार निंदा की गई है।

मैं इन संदर्भों के साथ थोड़ा काम करना चाहता हूँ। रोमियों 1:18, 19, क्योंकि परमेश्वर का क्रोध स्वर्ग से प्रकट होता है, अर्थात् परमेश्वर की ओर से, उन लोगों की सारी अभक्ति और अधर्म के विरुद्ध जो अपने अधर्म से सत्य को दबाते हैं। पौलुस पापियों, पुरुष और स्त्री दोनों को, सक्रिय रूप से परमेश्वर के रहस्योद्घाटन को दूर धकेलते हुए प्रस्तुत करता है।

यह कौन सा रहस्योद्घाटन है? पॉल हमें बताता है। क्योंकि परमेश्वर के बारे में जो कुछ जाना जा सकता है, वह उनके लिए स्पष्ट है क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें दिखाया है। आप किस बारे में बात कर रहे हैं, पॉल? वह कहता है, वह हमें बताता है, क्योंकि उसकी अदृश्य विशेषताएँ, अर्थात् उसकी अनन्त शक्ति और ईश्वरीय प्रकृति, स्पष्ट रूप से देखी गई हैं।

वाह, वाह, वाह, समय समाप्त। अदृश्य विशेषताएँ, स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। वह सुंदर वाक्यटुता के साथ लिख रहा है, इसमें कोई संदेह नहीं है, और वह हमारा ध्यान खींचता है, लेकिन इसका अर्थ यह है कि ईश्वर की विशेषताएँ, ईश्वर के वे गुण जो उसे ईश्वर बनाते हैं, जो किसी अन्य तरीके से अज्ञात होंगे, प्रकट हो गए हैं।

ओह, आपका मतलब है कि पवित्र शास्त्र में प्रकट किया गया है। यह सच है, लेकिन वह यहाँ ऐसा नहीं कह रहा है। नहीं, उसके गुण, और वह उनमें से दो को अलग करता है, उसकी शाश्वत शक्ति और दिव्य प्रकृति, उसकी सर्वशक्तिमत्ता, और उसका स्वयं का ईश्वरत्व, स्पष्ट रूप से देखा गया है, न केवल प्रकट किया गया है बल्कि दुनिया के निर्माण के बाद से बनाई गई चीजों में देखा गया है।

वाह! भजन 19:1, आकाश परमेश्वर की महिमा का वर्णन करता है, और आकाशमण्डल, उसकी हस्तकला को दर्शाता है। भजन आगे दिखाता है कि यह निरंतर है, दिन और रात, और हर जगह।

इस प्रकार, परमेश्वर अपनी सृष्टि में, निरंतर, हर जगह, हर जगह खुद को प्रकट करता है। और पॉल इससे सहमत है।

दुनिया के निर्माण और मानवजाति द्वारा दुनिया के अवलोकन के बाद से, परमेश्वर की शक्ति और दिव्यता उसके द्वारा बनाई गई चीजों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। न केवल स्पष्ट है, बल्कि उन्हें स्पष्ट रूप से देखा भी गया है। परमेश्वर यह सुनिश्चित करता है कि सृष्टि में दिखाई देने वाले उसके अदृश्य गुणों का प्रकटीकरण पापियों तक पहुँचे ताकि वे बिना किसी बहाने के रह सकें।

परमेश्वर मनुष्यों को थामे रहता है, जो उसकी छवि के वाहक हैं, जो न केवल ग्रहण करते हैं बल्कि समझते भी हैं, कम से कम आंशिक रूप से, कि वह परमेश्वर है, और वह इस संसार को बनाने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है; वह उन्हें बिना किसी बहाने के थामे रखता है कि उसकी आराधना न करें। फिर वे क्या करते हैं? पौलुस हमें बताता है कि यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे, इसका अर्थ है कि वे मसीह को जानते थे; वे बचाए गए थे, है न? नहीं, इस संदर्भ में नहीं, ऐसा नहीं है। हाँ, उन शब्दों का अक्सर यही अर्थ होता है, लेकिन यहाँ नहीं।

वे ईश्वर को ठीक उसी तरह जानते थे जैसा कि अभी कहा गया है। उसने अपनी रचना में अपने गुण प्रकट किए, उन्होंने सृष्टि के समय से ही उसकी रचना देखी है, उन्होंने उसकी बनाई हुई चीजें देखी हैं, और वे जानते हैं कि वह शक्तिशाली है, और वह ईश्वर है। मुझे दुनिया भर में ऐसा कोई समूह दिखाइए जिसके पास ईश्वर या देवताओं की कोई धारणा न हो, और किसी तरह की पूजा न हो रही हो।

केवल अति-शिक्षित मनुष्य ही नास्तिक विश्वदृष्टि का निर्माण कर सकते हैं और उसे कम से कम अपनी संतुष्टि के लिए कार्यान्वित कर सकते हैं। विडंबना यह है कि स्वाभाविक, अज्ञानी मनुष्य बेहतर जानते हैं। अब, वे जो जानते हैं, उससे बेहतर नहीं करते हैं, लेकिन वे जानते हैं कि एक सर्वोच्च सत्ता है।

वे जानते हैं कि यह दुनिया अपने आप नहीं बनी। मैं अपने एक मित्र के बारे में सोचता हूँ, जो एक ईश्वरीय व्यक्ति था, जिसने 40 साल तक दूसरों को अनुशासित करने और फिर एक सेमिनरी में पढ़ाने में प्रभु की सेवा की। वह आत्महत्या करने के लिए एक ढलान वाली पहाड़ी पर गया।

वह बहुत उदास था, और उसने बाहर देखा, और उसने सोचा, और उसने देखा, और उसने सोचा, और वह पीछे मुड़ा और वापस चला गया। उसने कहा, एक ईश्वर है। मैं उसे नहीं जानता।

मैं पूरी तरह से उलझन में हूँ। मेरी सोच वाकई गड़बड़ है, लेकिन ईश्वर है। इसमें कोई संदेह नहीं है।

शुक्र है, वह आदिम मनुष्य की तरह, शिक्षित, अभिमानी, घमंडी, विद्रोही, नास्तिक मनुष्य से बेहतर समझता था। हालाँकि वे परमेश्वर को उसके कुछ दुष्ट गुणों को समझने के अर्थ में जानते

थे, लेकिन उन्होंने उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान नहीं दिया या उसका धन्यवाद नहीं किया, बल्कि वे अपनी सोच में व्यर्थ हो गए। याद रखें, मैंने कहा, पॉल, सबसे ज़्यादा ग्रीक शब्द नूस, या मन, या विचार, विचार, मन, सोच, कारण से पाप के नोएटिक प्रभावों पर ज़ोर देता है।

पौलुस ने मनुष्य की सोच पर पाप के प्रभावों पर सबसे अधिक जोर दिया। यद्यपि वे परमेश्वर को जानते थे, फिर भी उन्होंने उसे परमेश्वर के रूप में सम्मान नहीं दिया या उसका धन्यवाद नहीं किया, बल्कि वे अपनी सोच में व्यर्थ हो गए, और उनके मूर्ख हृदय अंधकारमय हो गए। बुद्धिमान होने का दावा करते हुए, वे मूर्ख बन गए और अमर परमेश्वर की महिमा को मूर्तियों, नश्वर मनुष्य के सदृश चिह्नों से बदल दिया।

वे मनुष्यों की पूजा करते हैं और इससे भी बदतर, पक्षियों, जानवरों और यहाँ तक कि रेंगने वाले जीवों की भी। ईश्वर का सामान्य रहस्योद्घाटन, उसका प्राकृतिक रहस्योद्घाटन, हर मनुष्य तक पहुँचता है, और ऐसा नहीं है, ऐसा नहीं है। एक व्यक्ति गुफा में इतनी गहराई तक जा सकता है कि वहाँ बिल्कुल भी रोशनी नहीं होगी।

यह सच है, और अगर उन्होंने अपने प्रकाश के स्रोतों को बंद कर दिया, जो कि बहुत ही मूर्खतापूर्ण बात है, या उनके पास कई स्रोत नहीं हैं, तो वे वहीं फँस सकते हैं। ठीक है, मैं यहाँ हूँ, भगवान से दूर। यही मेरा उद्देश्य है, बस उससे दूर हो जाना। मैं उस सूरज को नहीं देखना चाहता जिसके पास एक सर्किट है, भजन 19 हमें बताता है और लगातार भगवान की गवाही देता है।

इसमें लिखा है भगवान ने मुझे बनाया, भगवान ने मुझे बनाया, भगवान ने मुझे बनाया। बाहर निकलो, सूरज। बाहर निकलो, चाँद और सितारे।

यह अंधरा है, और यह शांत है, और मैंने आखिरकार अपना उद्देश्य हासिल कर लिया है, लेकिन फिर मैं अपनी साँसों को सुनता हूँ, और मैं अपने दिल की धड़कन को सुनता हूँ, और मैं खुद ईश्वर का प्राणी हूँ, उसकी शक्ति और दिव्यता का प्रमाण, कि उसने मुझे अपनी छवि में बनाया, उसने मुझे अपने जैसा बनाया। मैं उन चीज़ों में ईश्वर के रहस्योद्घाटन की वास्तविकता से बच नहीं सकता जो उसने बनाई हैं, जिसमें मैं भी शामिल हूँ। इसलिए, ईश्वर ने उन्हें उनके दिलों की वासना, अशुद्धता, आपस में अपने शरीर का अपमान करने के लिए छोड़ दिया।

गलत मत समझिए; परमेश्वर ने आदम और हव्वा को बनाया; उसने उन्हें साथ लाया, अगर आप चाहें तो पहली शादी, और एक आदमी को अपने पिता और माँ को छोड़ना था और अपनी पत्नी से चिपकना था, और उन्हें एक शरीर बनना था, और यह सेक्स के लिए एक व्यंजनापूर्ण भाषा है, और आदम हव्वा को जानता था। परमेश्वर ने सेक्स बनाया। वह चाहता है कि मनुष्य विवाह के संदर्भ में एक दूसरे का आनंद लें, लेकिन यह मानव हृदय की मूर्तिपूजा के कारण है। परमेश्वर मनुष्यों को यौन पाप के लिए छोड़ देता है क्योंकि वे आदान-प्रदान करते हैं, फिर से वही गंदा शब्द है, वे मूर्तियों के लिए परमेश्वर की महिमा का आदान-प्रदान करते हैं, और अब वे झूठ के लिए मनुष्य के लिए परमेश्वर और उसकी इच्छा के बारे में सच्चाई का आदान-प्रदान करते हैं, और सृष्टिकर्ता की बजाय सृष्टि की पूजा और सेवा करते हैं, और पॉल, जैसा कि वह अक्सर करता है,

खुद को रोक नहीं सकता, सृष्टिकर्ता, जो हमेशा के लिए धन्य है, जो हमेशा के लिए धन्य है, आमीन।

इस कारण से, परमेश्वर ने उन्हें अपमानजनक वासनाओं के लिए छोड़ दिया, क्योंकि उनकी स्त्रियों ने स्वाभाविक संबंधों का आदान-प्रदान किया, जिसका अर्थ है पुरुषों के साथ, जो स्वभाव के विपरीत हैं, और पुरुषों ने भी स्त्रियों के साथ स्वाभाविक संबंधों को छोड़ दिया और एक दूसरे के लिए वासना से भर गए, दूसरे पुरुषों के लिए, पुरुषों ने पुरुषों के साथ बेशर्मी से काम किया, और अपने आप में अपनी गलती के लिए उचित दंड प्राप्त किया। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बाइबल समलैंगिक पाप सहित यौन पाप की निंदा करती है। निश्चित रूप से, ईसाइयों को सभी लोगों, सभी पापियों, विषमलैंगिक और समलैंगिक से प्यार करना चाहिए, लेकिन हम अपने धर्मशास्त्र, अपनी शिक्षाओं या अपनी नैतिकता को सामुदायिक मानकों, या जो कुछ भी मनुष्य प्रस्तावित कर सकते हैं, या मानव दर्शन के अनुरूप नहीं बनाते हैं।

सोला स्क्रिप्टुरा का अर्थ है कि धर्मशास्त्र और नैतिकता में हर चीज के लिए बाइबल हमारा मुख्य अधिकार है, हम क्या मानते हैं और कैसे जीते हैं। समलैंगिक प्रथा ईश्वर के वचन की शिक्षाओं के साथ असंगत है। मैं इसे किसी भी तरह के अविश्वासी लोगों के लिए घृणा या क्रोध या प्रेम की कमी के साथ नहीं कहता, बल्कि मैं इसे ईश्वर के वचन के एक नियुक्त शिक्षक के रूप में कहता हूँ।

और चूँकि उन्होंने परमेश्वर को स्वीकार करना उचित नहीं समझा, इसलिए मनुष्य मूर्तिपूजा और यौन पाप में चले गए, इसलिए परमेश्वर ने उन्हें एक पतित मन के अधीन छोड़ दिया ताकि वे वह करें जो नहीं करना चाहिए। वे हर तरह के अधर्म, बुराई, लोभ और द्वेष से भरे हुए थे। वे ईर्ष्या, हत्या, झगड़े, छल और दुर्भावना से भरे हुए हैं।

ध्यान दें कि इस संदर्भ में यौन पापों से कहीं ज़्यादा की बात की गई है। वे गपशप करने वाले, निंदा करने वाले, परमेश्वर से घृणा करने वाले, अहंकारी, अभिमानी, डींग मारने वाले, बुराई के आविष्कारक, माता-पिता की अवज्ञा करने वाले, मूर्ख, विश्वासघाती, हृदयहीन और निर्दयी हैं। और फिर वह आयत आती है, हालाँकि वे परमेश्वर के धर्मी आदेश, रोमियों 1.32 को जानते हैं, कि जो लोग ऐसी चीज़ों का अभ्यास करते हैं वे मृत्यु के योग्य हैं।

वे अपने दिलों में जानते हैं, सभोपदेशक कहते हैं, भगवान ने हमारे दिलों में अनंत काल रखा है। हम इसे या यहां तक कि उसकी दुनिया को भी पूरी तरह से नहीं समझ सकते, लेकिन भगवान की भावना है। कैल्विन की संवेदना की धारणा ईश्वर के अस्तित्व के प्रति अंतर्निहित जागरूकता, डिवाइनिटैटिस, मानवजाति में अंतर्निहित है।

हालाँकि वे जानते हैं कि जो लोग ऐसी चीज़ों का अभ्यास करते हैं, वे न केवल ऐसा करते हैं बल्कि उन लोगों को स्वीकृति भी देते हैं जो ऐसा करते हैं। इस प्रकार, मनुष्य, उन्होंने सभोपदेशक की भाषा का उपयोग किया, सूर्य के नीचे, परमेश्वर की दुनिया में मनुष्य, परमेश्वर के वचन के अलावा, परमेश्वर के अस्तित्व को जानते हैं। और वे इसका खंडन करते हैं, लेकिन वे इसे जानते हैं, और वे उस चीज़ के विरुद्ध इनकार कर रहे हैं जिसे वे बेहतर जानते हैं।

और वे मूर्तिपूजा और यौन पाप में लिप्त हो जाते हैं, और ये सभी पाप जो उसने अभी सूचीबद्ध किए हैं। अध्याय 2 में, वह दूसरे समूह का न्याय करना शुरू करता है, और उनकी ज़रूरत को दिखाता है। पाप पर ज़ोर क्यों दिया जा रहा है? जैसा कि मैंने कहा है कि परमेश्वर पापियों से प्यार करता है।

यह औचित्य पर एक खंड है, और वह वहाँ पहुँच रहा है, लेकिन उसे उद्धार न पाने वाले लोगों के लिए सुसमाचार पर विश्वास करने और उद्धार पाने के लिए औचित्य की आवश्यकता को दिखाना होगा। इसलिए, शूलर, रॉबर्ट शूलर, उपदेशक जिसने सुधारकों पर पाप और न्याय के बारे में इस भयानक बात पर गलत आरोप लगाया, और वह एक सकारात्मक प्रतिनिधित्व देने जा रहा था और इसी तरह, पवित्र शास्त्र की शिक्षा को तोड़-मरोड़ कर पेश करने का दोषी है। अब, हम लूथर द्वारा बुरी खबर कहे जाने वाले उपदेशों का प्रचार करने में प्रसन्न नहीं हैं।

वह शब्दों के साथ खेल कर रहा है। गॉस्पेल का मतलब है यूंजेलियन, और लूथर ने कहा, हमें काकांगेलियन के बारे में बात करना पसंद नहीं है। काकोस का मतलब है बुराई, बुरा, इत्यादि।

हम अच्छी खबर बताना चाहते हैं, बुरी खबर नहीं, लेकिन गलातियों और रोमियों ने अच्छी खबर के बारे में बात करने से पहले बुरी खबर को समझाने के लिए इसे समझने के लिए एक आवश्यक पृष्ठभूमि तैयार की, इस पर विश्वास करना तो दूर की बात है। इस बात पर बहस चल रही है कि क्या रोमियों 2:1 में पॉल पहले से ही नैतिकतावादियों के बजाय यहूदियों के खिलाफ बोल रहा है, जैसा कि मैंने प्रस्तावित किया था। वास्तव में, मैं कुछ हद तक तटस्थ हो गया हूँ, और मैं कहूँगा कि यहाँ नैतिकतावादियों या यहूदियों के बारे में बात की जा रही है।

इसलिए, हे मनुष्य, तुम जो कोई बहाना नहीं रखते, तुममें से हर एक जो न्याय करता है, दूसरे पर न्याय करते समय अपने आप को दोषी ठहराता है, क्योंकि तुम, न्यायी, वही काम करते हो। हम जानते हैं कि परमेश्वर का न्याय उन पर सही ढंग से पड़ता है जो ऐसे काम करते हैं। हे मनुष्य, तुम जो ऐसे काम करने वालों का न्याय करते हो, और फिर भी वही काम करते हो, क्या तुम समझते हो कि तुम परमेश्वर के न्याय से बच जाओगे? या क्या तुम उसकी दया, सहनशीलता और धैर्य के धन पर गर्व करते हो, यह न जानते हुए कि परमेश्वर की दया तुम्हें पश्चाताप की ओर ले जाने के लिए है? लेकिन अपने हृदय के कारण, एक अपश्चातापी हृदय, क्रोध के दिन अपने लिए क्रोध जमा कर रहा है, जब परमेश्वर का धर्मी न्याय प्रकट होगा।

पौलुस की शिक्षाएँ कि पापी अपनी अनन्त दण्ड की अवधि को नहीं, बल्कि इसकी गंभीरता को, इसकी तीव्रता को, परमेश्वर के विरुद्ध अपने विद्रोह के द्वारा बढ़ा सकते हैं। आप अपने लिए क्रोध जमा कर रहे हैं। पद 12, वे सभी जिन्होंने व्यवस्था के बिना पाप किया है, व्यवस्था के बिना नष्ट हो जाएँगे।

व्यवस्था के अधीन पाप करने वाले सभी लोगों का न्याय व्यवस्था के अनुसार होगा। क्योंकि व्यवस्था के सुनने वाले परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं हैं, परन्तु व्यवस्था पर चलने वाले धर्मी ठहरेंगे। क्योंकि जब अन्यजाति लोग जिनके पास परमेश्वर की व्यवस्था अर्थात् दस आज्ञाएँ नहीं हैं, स्वभाव से ही व्यवस्था के अनुसार चलते हैं, तो वे अपने लिए व्यवस्था हैं।

वे दिखाते हैं कि व्यवस्था का काम उनके दिलों पर लिखा हुआ है, जबकि उनका विवेक भी गवाही देता है, और उनके परस्पर विरोधी विचार उन्हें दोषी ठहराते हैं या उन्हें माफ भी करते हैं। जिस दिन, मेरे सुसमाचार के अनुसार, परमेश्वर मसीह यीशु के द्वारा मनुष्यों के रहस्यों का न्याय करेगा। यहाँ क्या हो रहा है? अन्यजाति जिनके पास दस आज़ाएँ नहीं हैं, वे अपने लिए एक व्यवस्था हैं।

यह प्राकृतिक कानून से अलग कानून है, जो सामान्य रहस्योद्घाटन में प्रकट होता है, जिसमें मानव प्राणी भी शामिल हैं। यह हृदय पर लिखे गए परमेश्वर के कानून का प्रभाव है। यहाँ इमागो देई के नैतिक पहलू के बीच एक ओवरलैप है, जिसके बारे में हमने इफिसियों 4:22 से 24 में बात की थी।

आदम और हव्वा को सच्ची धार्मिकता और पवित्रता में बनाया गया था। यह उसी विचार के बारे में बात कर रहा है। परमेश्वर ने मानव स्वभाव में नैतिकता, सही और गलत की समझ का निर्माण किया।

और उसने हमें विवेक दिया है, जो एक तरह का उपकरण है जो मापता है कि आपने सही किया, आपने अपराध किया। सही और गलत की इस अंतर्निहित भावना के अनुसार, हृदय पर लिखे परमेश्वर के नियम के अनुसार, पॉल कहते हैं कि जो लोग परमेश्वर के नियम के बिना पाप करते हैं, उनके पास परमेश्वर का नियम है, परमेश्वर का नियम उनके हृदय पर लिखा हुआ है। उन्हें दोषी ठहराया जाएगा।

और जो लोग पाप करते हैं, वे और भी बुरे हैं। परमेश्वर का कानून लिखे होने के बावजूद, उनके दिलों पर भी परमेश्वर का कानून बना रहता है। और जब वे पाप करते हैं, तो उन्हें दुगुनी सज़ा मिलती है।

लेकिन वास्तव में यह तीन बार है। सृष्टि में परमेश्वर का नियम, हृदय में परमेश्वर का नियम, लिखित रूप में परमेश्वर का नियम। तो, वह निश्चित रूप से यहाँ यहूदी दिशा की ओर इशारा कर रहा है।

यह एक आश्चर्यजनक बात है। जिन गैरयहूदियों के पास कानून नहीं है, वे खुद ही कानून हैं। ओह!

इसलिए, मनुष्य सामान्य प्रकाशन का हिस्सा हैं, जैसा कि गुफा में रहने वाले व्यक्ति ने प्रदर्शित किया। मनुष्य दूसरे अर्थ में भी सामान्य प्रकाशन का हिस्सा हैं क्योंकि सृष्टि में परमेश्वर का प्रकाशन उसकी सुंदरता, उसके सृजनकर्ता होने, सृजनकर्ता होने, अगर मैं कोई शब्द बना सकता हूँ, तो उसकी शक्ति, उसकी बुद्धि को प्रकट करता है, लेकिन उसकी पवित्रता, या उसके न्याय, या उसके अनुग्रह, या सुसमाचार को प्रकट नहीं करता। यह उन चीज़ों को प्रकट नहीं करता।

लेकिन हृदय में परमेश्वर का नियम सुसमाचार को प्रकट नहीं करता; यह परमेश्वर की पवित्रता और न्याय को प्रकट करता है क्योंकि यह हम पर आरोप लगाता है। विवेक एक मापक है, अगर आप चाहें तो, बैरोमीटर, थर्मामीटर, जो हमारे अंदर मौजूद इस अंतर्निहित न्यायाधीश के खिलाफ काम करता है। यह परमेश्वर का नियम है जो मानव अस्तित्व और जीवन के ताने-बाने में बना हुआ है।

हम सही और गलत जानते हैं। यही बात सीएस लुईस कह रहे थे। हम सही और गलत जानते हैं, और मैं इसे साबित कर दूंगा, उन्होंने कहा।

मैं तुम्हारी नाक पर मुक्का मारूंगा या तुम्हारे पैर के अंगूठे पर पैर रख दूंगा। तुम कहोगे, ओह, तुम मेरे साथ क्या कर रहे हो? यह आरोप दिखाता है कि तुम सही और गलत में फर्क जानते हो। जब तुम्हारे साथ गलत होता है, तो तुम सही और गलत में फर्क करने में माहिर हो।

जब आप गलत होते हैं, तो कोई और, इतना नहीं। आप शायद किसी तरह से इसे छिपाते हैं, इसे तर्कसंगत बनाने की कोशिश करते हैं। लेकिन जब यह आपके दरवाजे पर आता है, ओह, आप इसे इंगित करने में जल्दी करते हैं।

गैर-यहूदी लोग अपने लिए खुद ही कानून हैं क्योंकि वे इसी नैतिक बैरोमीटर से बने हैं। सही और गलत को जानना मानवता का एक अनिवार्य हिस्सा है। हम इससे छुटकारा नहीं पा सकते।

यह हमारा हिस्सा है। हम ईश्वर की ओर से एक रहस्योद्घाटन हैं। हम ईश्वर की ओर से एक नैतिक रहस्योद्घाटन हैं।

इसका वही अर्थ है जो यह कहने के समान है कि हम उसकी धार्मिकता और सच्ची पवित्रता की छवि में बनाए गए हैं। परमेश्वर की छवि में एक नैतिक घटक होता है। लेकिन अगर आप खुद को यहूदी कहते हैं, तो मनुष्य की निंदा की जाती है क्योंकि वे सृष्टि में परमेश्वर के कानून के खिलाफ विद्रोह करते हैं और मूर्तिपूजा, यौन पापों और रोमियों 1 के अंत में वर्णित पापों की पूरी श्रृंखला में शामिल होते हैं। मनुष्य की तब भी निंदा की जाती है जब वे कभी-कभी सही और गलत की अपनी समझ का उल्लंघन करते हैं, जो उनके अंदर अंतर्निहित है।

वे विवेक और हृदय पर परमेश्वर के कानून के संदर्भ में सामान्य प्रकाशन हैं। यहूदियों की तीसरी तरह से निंदा की जाती है। लेकिन अगर तुम अपने आप को यहूदी कहते हो, रोमियों 2:17, और व्यवस्था पर भरोसा करते हो और परमेश्वर पर घमण्ड करते हो, और उसकी इच्छा जानते हो और उत्तम बातों को स्वीकार करते हो क्योंकि तुम्हें व्यवस्था से शिक्षा मिली है, और अगर तुम्हें यकीन है कि मैं ही अंधों का अगुआ, अंधकार में रहने वालों के लिए ज्योति, मूर्खों का शिक्षक, बच्चों का शिक्षक हूँ, और व्यवस्था में ज्ञान और सत्य का मूर्त रूप हूँ, तो तुम जो दूसरों को सिखाते हो, क्या तुम अपने आप को नहीं सिखाते? जब तुम चोरी के खिलाफ उपदेश देते हो, तो क्या तुम चोरी करते हो? जब तुम कहते हो कि व्यभिचार नहीं करना चाहिए, तो क्या तुम व्यभिचार करते हो? तुम जो मूर्तियों से घृणा करते हो, क्या तुम मंदिरों को लूटते हो? तुम जो व्यवस्था में घमण्ड करते हो, व्यवस्था को तोड़कर परमेश्वर का अपमान करते हो।

क्योंकि लिखा है, तुम्हारे कारण अन्यजातियों में परमेश्वर के नाम की निन्दा की जाती है। यशायाह 52 :5. क्योंकि यदि तुम व्यवस्था का पालन करो, तो खतना का मूल्य तो है, परन्तु यदि तुम व्यवस्था को तोड़ो, तो तुम्हारा खतना बिन खतना ठहरेगा।

ओह। श्लोक 29, लेकिन एक यहूदी अंदर से एक है, और खतना आत्मा द्वारा हृदय का मामला है, न कि पत्र का। यह संभवतः यहूदा शब्द पर एक नाटक है, जिसका अर्थ है प्रशंसा।

उसकी प्रशंसा मनुष्य की ओर से नहीं बल्कि परमेश्वर की ओर से है। यहूदा, यहूदी, पौलुस उसी के साथ खेल रहा है। इसलिए, रोमियों 2 के माध्यम से, पौलुस ने दुनिया को परमेश्वर के सामने घुटनों के बल ला दिया है।

सृष्टि में रहस्योद्घाटन हमें उस बहाने के साथ छोड़ देता है। हृदय में रहस्योद्घाटन हमें तब दोषी ठहराता है जब हम हृदय पर परमेश्वर के उस नियम का उल्लंघन करते हैं। और वह यहूदी जिसके पास परमेश्वर का लिखित वचन है, वह बदतर स्थिति में है क्योंकि परमेश्वर का लिखित वचन हृदय के नियम और सृष्टि के नियम से कहीं बेहतर निंदा करने वाला और न्याय करने वाला है।

हे भगवान। रोमियों 3 के आरंभिक भाग में यहूदियों के पास जो लाभ हैं, उनका बचाव करने के बाद, पौलुस उन लोगों पर क्रोधित हो जाता है जो अनुग्रह पर उसके जोर को यह कहते हुए दोष देते हैं कि परमेश्वर पाप को अनदेखा करता है। पौलुस को यह बात इतनी अच्छी तरह से पता है कि परमेश्वर न्याय करेगा।

हम किसी भी तरह से पाप को नज़रअंदाज़ नहीं करते। तो फिर, परमेश्वर संसार का न्याय कैसे कर सकता है? रोमियों 3:6. यह तो तय है। इसमें कोई सवाल ही नहीं है।

अगर कोई ईश्वर है, तो वह पवित्र और न्यायी है। वह न्याय करेगा। बस इतना ही।

दिलचस्प बात यह है कि वह भजन 51 को उद्धृत करता है, जो कि वही शब्द है जो मैं कहता हूँ। यहाँ एक दीर्घवृत्त है। और दाऊद ने कबूल किया कि परमेश्वर अपने न्याय के अंतिम दिन न्यायसंगत ठहराया जाएगा।

यह वही है जो उसने रोमियों 3.4 में उद्धृत किया है। उन लोगों के बारे में जो कहते हैं कि पॉल सिखाता है, ऐसा क्यों नहीं करते? यदि मनुष्य की पापमयता केवल औचित्य में परमेश्वर के अनुग्रह को प्रदर्शित करने के लिए काम आती है, तो हमें जंगली जानवरों की तरह पाप क्यों नहीं करना चाहिए? क्यों नहीं पूरी तरह से आगे बढ़ना चाहिए? ओह, पॉल वास्तव में इस पर नाराज था। बुराई क्यों न करें ताकि अधिक अच्छाई हो सके? जैसा कि कुछ लोग हम पर निंदा करते हुए आरोप लगाते हैं, पॉल के शब्द सरल हैं। उनकी निंदा न्यायसंगत है।

उन्हें शापित किया जाए। तो फिर क्या? क्या हम यहूदी इससे बेहतर हैं? रोमियों 3:9. बिलकुल नहीं। क्योंकि हम पहले ही आरोप लगा चुके हैं कि सभी, यहूदी और यूनानी दोनों ही पाप के अधीन हैं, जैसा कि लिखा है।

कोई भी धर्मी नहीं है। नहीं, एक भी नहीं। यह यीशु के बारे में बात नहीं कर रहा है।

यह सूर्य के नीचे मनुष्यों के बारे में बात कर रहा है, मनुष्य जिनके दिलों में कानून है, और मनुष्य जिनके हाथों में कानून है। पुराना नियम। कोई नहीं समझता।

कोई भी ईश्वर की तलाश नहीं करता। बेशक, लोग ईश्वर की तलाश करते हैं। ओह, वे ईश्वर की तलाश खुद नहीं करते।

वे केवल तभी ईश्वर को खोजते हैं जब ईश्वर उन्हें खोजता है। सभी भटक गए हैं। साथ में वे बेकार हो गए हैं।

कोई भी अच्छा काम नहीं करता। एक भी नहीं। कौन सी भाषा?

यह एक व्यापक भाषा है। यह 1:18 से पिछले अध्यायों का पॉल का सारांश है। और फिर वह उदाहरण देता है कि वह बाद में क्या कहेगा। जैसे आप अपने शारीरिक उपकरणों, अपने शारीरिक अंगों को पाप के लिए उपकरणों के रूप में उपयोग करते हैं, वैसे ही अब उन्हें धार्मिकता के उपकरणों और औजारों के रूप में उपयोग करें।

खैर, वह यहाँ पहले वाले बिंदु को स्पष्ट करता है। उनका गला खुली कब्र है। वे धोखा देने के लिए अपनी जीभ का इस्तेमाल करते हैं।

उनके होठों में साँपों का विष भरा है, वे विषैले साँप हैं। उनका मुँह शाप और कड़वाहट से भरा है। उनके पैर खून बहाने के लिए तेज़ हैं।

उनके मार्ग में विनाश और दुःख है। और उन्होंने शांति का मार्ग नहीं जाना। उनकी आँखों के सामने ईश्वर का कोई भय नहीं है।

अब हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है, वह व्यवस्था के अधीन लोगों से कहती है, ताकि हर मुँह बंद किया जा सके और पूरी दुनिया परमेश्वर के सामने जवाबदेह ठहरे। क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई भी मनुष्य उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का ज्ञान होता है। 1:18 से 3:20 तक, पौलुस दुनिया को परमेश्वर के सामने घुटनों के बल लाता है।

3:21, लेकिन अब परमेश्वर की धार्मिकता प्रकट हुई है। 1:16 और 17 में रोमियों के विषय पर वापस आते हैं। थोड़ा पीछे हटते हुए, सबसे ज़्यादा, इस्राएल की निंदा की गई है क्योंकि उसने परमेश्वर के पवित्र कानून का दुरुपयोग किया था।

उसने वह लिया जो उसे उसके पाप के लिए दोषी ठहराने और उसे मसीह की ओर ले जाने के लिए था और इसके बजाय इसे गर्व का अवसर बना दिया, 2:23। उसने खुद को उन अन्यजातियों से श्रेष्ठ माना जिनके पास परमेश्वर के लिखित रहस्योद्घाटन का अभाव था। वे बर्बर लोगों का एक

समूह हैं, रोमियों के अध्याय दो के 17 से 24 तक। उसने अपने कानून के अनुसार अन्यजातियों का न्याय किया है और फिर भी उसने खुद कानून तोड़ा है।

इस प्रकार इस्राएल सबसे बड़ा पाखंडी था, श्लोक 21 से 24 तक। इस्राएल भूल गया है कि सच्चा धर्म आंतरिक है, न कि केवल बाहरी। इसने आत्मा के आंतरिक कार्य, हृदय के खतने के स्थान पर, शरीर के खतने के बजाय, व्यवस्था के बाहरी अनुरूपता को अपनाया है।

इस्राएल ने परमेश्वर की प्रशंसा के बजाय मनुष्यों की प्रशंसा की चाहत में अपना अच्छा नाम खो दिया है, श्लोक 28, 29। सीईबी क्रैनफील्ड, रोमनों पर अपनी महान टिप्पणी में, बताते हैं, उद्धरण, समापन सापेक्ष खंड में संभवतः यहूदी, यहूदी और हिब्रू क्रिया के बीच संबंध पर एक जानबूझकर नाटक शामिल है जिसका अर्थ है प्रशंसा, यदाह का हाइफल और इसके व्युत्पन्न। यह एक अजीब नाटक है जो उत्पत्ति 29:35, 49:8 में वापस जाता है, और यहूदी धर्म में अच्छी तरह से जाना जाता है।

रोमियों पर क्रैनफील्ड की अंतर्राष्ट्रीय आलोचनात्मक टिप्पणी। रोमियों 3:9 से 20, 1.18 में शुरू हुए पॉल के तर्क की परिणति है। फिर हम क्या निष्कर्ष निकालें, वह पद 9 में कहता है। वह निष्कर्ष निकालता है कि यहूदी और गैर-यहूदी दोनों ही परमेश्वर के सामने दोषी हैं। वह अपने शोध का अंतिम प्रमाण पुराने नियम के ग्रंथों के संग्रह में प्रस्तुत करता है जो पद 10 से 18 में मानव जाति की सार्वभौमिक पापपूर्णता को प्रदर्शित करता है।

पौलुस इस बात से इनकार करता है कि एक भी धर्मी मनुष्य है, पद 10. वह कहता है कि कोई भी व्यक्ति अपने आप परमेश्वर की बातों को नहीं समझ सकता। कोई भी व्यक्ति अपने आप परमेश्वर की खोज नहीं करता।

इसका तात्पर्य यह है कि परमेश्वर को पापियों की तलाश करनी चाहिए, इससे पहले कि वे उसकी तलाश करें। प्रेरित का मानना है कि सारी मानवजाति परमेश्वर के मार्ग से भटक गई है। किसी के पास ऐसा कुछ नहीं है जो उसे परमेश्वर के सामने पेश करे।

पौलुस अपने इस आरोप पर लौटता है कि एक भी व्यक्ति अच्छा नहीं है, पद 12. इस तरह से वह हमारे लिए 3:10 से 18 को 12 और 13 के बीच विभाजित करता है। 13 से 18 में पौलुस उस विचार का उपयोग करता है जिसका वह 6.13 में स्पष्ट रूप से उल्लेख करेगा, जैसा कि मैंने पहले कहा था, कि एक व्यक्ति अपने शरीर के अंगों को अच्छे या बुरे के लिए उपकरण के रूप में उपयोग करता है।

रोमियों 3 में, शरीर के अंगों का इस्तेमाल, बेशक, बुराई के लिए किया गया है। जीभ, आयत 13, 14. पैर, आयत 15 से 17.

और आँखें, श्लोक 18. सभी मनुष्य परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह को प्रकट करते हैं। पौलुस 1:18 से 3:20 तक को 3:19 और 20 के साथ समाप्त करता है।

हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ भी कहती है, वह व्यवस्था के अधीन रहने वालों से कहती है, ताकि हर मुँह बंद हो जाए और पूरी दुनिया परमेश्वर के सामने जवाबदेह ठहरे, क्योंकि व्यवस्था के कामों से कोई भी मनुष्य उसके सामने धर्मी नहीं ठहरेगा, क्योंकि व्यवस्था के द्वारा पाप का ज्ञान होता है। व्यवस्था उसे धर्मी नहीं ठहराती; यह पाप का दोषी ठहराती है। इसलिए, सभी लोग, सृष्टि के अधीन रहने वाले, जिनके हृदय में परमेश्वर की व्यवस्था है, और यहूदी, व्यवस्था के विभिन्न रूपों द्वारा परमेश्वर के सामने दोषी ठहराए जाते हैं।

प्राकृतिक व्यवस्था, हृदय में व्यवस्था, मूसा की व्यवस्था। पौलुस पद 21 में 1:16 और 17 के घोषित विषय पर लौटता है। मसीह और सुसमाचार में परमेश्वर की उद्धारकारी धार्मिकता का प्रकाशन।

हम अपने अगले व्याख्यान में इसी विषय पर लौटेंगे, क्योंकि हम अभी भी रोमियों 5:12 से 8:19 तक के मूल पाप के महान अंश को रोमियों 1 से अध्याय 5 के संदर्भ में स्थापित करने के लिए आधार तैयार कर रहे हैं।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा मानवता और पाप के सिद्धांतों पर दी गई शिक्षा है। यह सत्र 14, मूल पाप, रोमियों 5:12-19, रोमियों 1:18-3:21 के संदर्भ में है।